फैला हुआ हाथ

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव

प्रस्तुत काव्य संग्रह और कवि

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव मूलतः गीतकार हैं। गीत भावाकुल क्षणों में जन्म लेता है। इसलिए गीत का रचयिता भी अत्यन्त संवेदनात्मक धरातल पर जीवन को जीता है। सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं और पेशे से अधिशाषी अभियन्ता हैं। किन्तु उनकी आत्मा में साहित्य बसा हुआ है। वे अत्यन्त संवेदनशील हैं। उनके आरम्भिक गीतों में वैयक्तिक जीवन की पीड़ा और व्याकुलता है। किसी वियोगी के मन की छटपटाहट है। इसलिए इनके आरम्भिक गीत संग्रह छायावादोत्तर कालीन गीतकारों की छाया लेकर उभरते हैं। किन्तु परवर्ती गीतों में नवीनता है। आज के यथार्थ को झेलने के बाद गीतकार की रचनाओं में नया मोड़ आया है। भावाकुलता के स्थान पर जीवन बोध और पीड़ा के स्थान पर परिवेश से संघर्ष की भावना गीतकार के अन्दर पनपी है। इसलिए भाषा भी धारदार बन गई है।

प्रस्तुत काव्य संग्रह नयी कविता का संग्रह है। छोटी-छोटी कवितायें नवीन जीवन बोध को व्यक्त करती हैं। इनमें आधुनिकता का बोध है। यह बोध यथार्थ पर आधारित है और इसके माध्यम से कवि का मूल्य बोध तथा उसकी आस्था व्यक्त होती हैं। सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव की यह नयी काव्य यात्रा है। राग के स्थान पर बोध और भावुक भाषा के स्थान पर तेज और धारदार भाषा, इस काव्य संग्रह की विशेषता है। प्रतीक विधान इस संग्रह का एक अन्य वैशिष्ट्य है। अपने आस-पास की वस्तुओं के बीच से कवि ने प्रतीकों को चुना है। लेकिन ये प्रतीक हमारे चिरपरिचित हैं। ये अपने अर्थ को सहज ही सम्प्रेषित कर देते हैं। ये प्रतीक कविता की भाषा में शक्ति का संचार करते हैं।

—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

फैला हुआ हाथ

परम आदरणीय
श्री पुरुषोत्तम मोदी जी
को सेवा में
सादर
[signature]
15.XII.93

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव

प्रकाशक

बोध

एस० २/१४१, डिठोरी महाल
वाराणसी-२२१००२

प्रथम संस्करण : १९९१
मूल्य : १५·००

मुद्रक :
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
भुवनेश्वर नगर कालोनी
अर्दली बाजार, वाराणसी
फोन : 43035

दो शब्द

कीचड़ों और काँटों से "परिचय" के बाद ही हम "फूलों सा खिलें"। इन्हीं कीचड़ों और काँटों की "अभिव्यक्ति" ही मेरे "उद्गार" हैं। आत्म-निर्भर होने के लिए ही "फैला हुआ हाथ" जो आप देख रहे हैं।

मैं न तो पूँछ ही हिला सकता हूँ, न भौंक ही सकता हूँ क्योंकि मैं आदमी हूँ, इसीलिए सौम्यता से सत्य कहने का आदी हूँ और अपनी लीक खुद बनाने में समर्थ हूँ। मैं अपना सिर ऊपर-नीचे या दाँयें बाँयें न करके सीधा रखना चाहता हूँ। मुझे किसी कन्धे, लाठी, चश्मे, वैशाखी, बाहँ एवं लिफ्ट का सहारा नहीं चाहिए, क्योंकि मेरी आवाज बुलन्द, आँख रोशन, दोनों पैर जमीन से जुड़े-खड़े, कदम सही हैं एवं एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ने की इच्छा है। मैं किसी भी हालत में अमरबेलि नहीं बनना चाहता क्योंकि मैं हर हालत में जमीन से जुड़ा रहना चाहता हूँ। यदि मेरी बस्ती में केवल भैंस और चरवाहे ही रह गये हों तो मैं अपनी बीन लेकर दूसरी बस्ती में चला जाना पसन्द करूँगा बजाय इसके कि अपनी बस्ती में बिरहा गाना शुरू कर दूँ या दंगल लड़ना।

हम तारे हैं जो सूरज को अपने कन्धों पर उगाते हैं और डूबने पर कन्धा भी देते हैं, जब कि उग जाने पर यही सूरज हमको टिम-टिमाते भी नहीं देख सकता। हम आम, गन्ने की फसल व टमाटर हैं जो चूसे जाते हैं—काटे जाते हैं। हम भट्ठी के कोयले हैं—हमारे बीच आग लगाकर हमें सुलगाया, धधकाया जाता है फिर रोटी सेंकने, हाथ सेंकने के बाद ठण्डा कर दिया जाता है और यही क्रम जारी रहता है जब तक कि हम जल-जल कर राख न हो जाँय। हम तो खरबूजे हैं जो हर हालत में कटेंगे ही चाहे छुरी हम पर गिरे चाहे हम छुरी पर। हम जमीन से जुड़े सड़क के आदमी हैं जिस पर कार वाले आसानी से कीचड़ उछाल कर बगल से सर्र्-र से निकल जाते हैं।

लेकिन यदि हम चरण स्पर्श कर सकते हैं—चरण दबा सकते हैं तो चरण खींच भी सकते हैं। हम धूल ही सही यदि सींचे जायेंगे

तो चरणों में पड़े रहेंगे अन्यथा कुरेदे जाने पर-लात मारे जाने पर उड़ कर आँखों में पड़ेंगे और धराशायी कर देंगे। हम खरबूजे ही सही लेकिन एक साथ छुरी पर टूट कर उसे गिरा सकते हैं या छुरी वाले हाथ को शिथिल कर सकते हैं।

हमको भी भट्ठी का कोयला न बनकर बनना होगा कोयला पेंसिल का और लिखना होगा कुछ नया इतिहास के पन्ने पर—परवाह नहीं कि मिटाने की कोशिश करे बाद में कोई रबड़। हमें भी ढूढ़ निकालना होगा उस भद्र पुरुष को हर गली, मोड़, चौराहे पर जो आपस में हिनमाना, तरबूज, वाटरमिलन को अलग-अलग समझ कर झगड़ते हुए बच्चों को समझा सकें कि हिनमाना, तरबूज, वाटरमिलन एक ही चीज का नाम है और हम भी इसे समझें, हमें भी समझना और समझाना होगा कि आकाश को एक चहारदीवारी में बन्द नहीं किया जा सकता और इस प्रकार आकाश के नाम पर उन हिलती-डुलती चहारदीवारियों को धराशायी करना बन्द करना होगा जिसमें आकाश वास्तव में विद्यमान है।

हम सबको मिलकर समुद्र का मंथन करना होगा जो अपने अन्तर में अमृत कलश छिपाये जुड़ा है पाताल से और अपनी सतह से उठता भी है तो पूर्णचन्द्र को चुराने-अमृत कलश के भ्रम में। हममें से किसी एक को ही मंदराचल, किसी एक को बासुकि, किसी एक को कच्छप बनना होगा और मथना होगा सागर के अन्तर को। क्रोधित हो सागर द्वारा हलाहल उत्पन्न करने पर हममें से ही किसी को शिव बनकर आगे आना होगा। इस तरह सागर के अन्तर को तब तक मथना होगा जब तक कि वह अमृत कलश समर्पण न कर दे।

फिर वह दिन दूर नहीं जब हमें "सुबह का सूरज" दिखायी देगा।

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव
अधिशाषी अभियन्ता
जल संस्थान, वाराणसी

१ मार्च १९९१
(होलिकोत्सव)

अनुक्रम

पृष्ठ

दिन के तारे

हम
बेचारे
दिन के तारे

टिमटिमाना भी हमारा
देखा नहीं जाता
सूरज से
जबकि
उसे उगाया था
हमने ही अपने कंधों पर
और डूबने पर
हम ही देंगे
अपने कंधे ।

आकाश

हमने दावा किया
बाँध लेने का
आकाश को
एक छोटी सी चहारदीवारी में
और लोगों ने इसे मान लिया

हमने आगाह किया
कि नापाक करना चाहते हैं दूसरे लोग
हमारे आकाश को
और किसी ने कोई तर्क नहीं किया
उल्टे सतर्क हो गए

फिर हमारे एक इशारे पर
लोगों ने धराशायी कर दिया
दूसरे लोगों की
हिलती-डुलती कई चहारदीवारियों को
जिनमें विद्यमान था
आकाश का अंश
वास्तव में।

आम

हम
आम हैं
इसलिए चूसे जायेंगे

चूसे जाना ही
हमारी नियति है

मैं टिकोरा रहकर ही
डाली से अलग हो जाना
समझता हूँ बेहतर
चाहे उड़ा ले जाय मुझे कोई आँधी
मार-मार कर भुर्ता बना दे कोई लाठी
पीस-पीस कर चटनी बना दे कोई हाँथ
कम से कम
चूसा तो नहीं जाऊँगा।

मुट्ठी–१

एक मुट्ठी अँधेरे में
मेज के नीचे बाँधी जाती है
जिसमें अँगूठा बाहर रहता है
क्योंकि इस मुट्ठी को बाँधने की कीमत
अँगूठे की मुहर होती है

दूसरे तरह की मुट्ठी उजाले में
कंधे के ऊपर बाँधी जाती है
जिसमें अँगूठा अन्दर रहता है
क्योंकि अँगूठे की मुहर की रक्षा हेतु
इस मुट्ठी को बाँधी जाती है

वक्त का तकाजा है
कि पहली वाली मुट्ठी बाँधने
व बँधवाने वालों के खिलाफ
दूसरी वाली मुट्ठी
बाँध ली जाय।

मुट्ठी–२

मुट्ठी बाँधे रहने पर
माँ भी दूध नहीं पिलाती
जब तक रोयें न;
लेकिन
जब हाथ पसरे
तो मिल गयी दो गज जमीन
बिना माँगे

क्या तुम मुट्ठी बाँध कर
पसंद करोगे–रोना
या पसारना हाथ

मैं तो मुट्ठी बाँधकर
जुबान खोलना चाहता हूँ
क्योंकि मैं हमेशा
जवाँ रहना चाहता हूँ।

गरम मुट्ठी

अंधेरे में
हथेली में दबा कर तुम
जिस चीज से गरम कर रहे हो अपनी मुट्ठी
वह गरीबों के खून और पसीने से बनी है
जबकि उजाले में
गरीबों के खून से तुम्हें नफरत है
और उनके पसीने से तुम्हें घिन आती है
ऐसा करने से तुम्हारा हाथ खारा व काला होगा
बहुत होगा यह
लेखपाल के खसरे या म्यूनिस्पिलिटी के रजिस्टर में
तुम्हारे नाम की स्याही बन जायेगी
जो काट दी जायेगी तुम्हारी परछाईं मिटते ही

अरे यदि तुम्हें मुट्ठी गरम करने की आदत ही पड़ गयी है
तो अँधेरे में नहीं—उजाले में मुट्ठी गरम करो
उस झण्डे की मूठ से
जो गरीबों के खून और पसीने की रक्षा के लिए उठाया जाता है
ऐसा करने से तुम्हारा हाथ मजबूत होगा
और यह बन जायेगी
तुम्हारे नाम की अमिट स्याही
इतिहास के पन्नों में।

धूल

हम
धूल हैं
यदि तुम हमें सींचोगे
तो तुम्हारे चरणों में पड़े रहेंगे
तुम्हारे लिए तैयार करते रहेंगे जमीन
और तुम्हें महकाते रहेंगे माटी की गंध से,
लेकिन यदि तुम
बार बार हमें कुरेदोगे
या ठोकर मारते रहोगे
या झाड़ू मारोगे
तो हम तुम्हारे चरणों को छोड़कर
तुम्हारी आँखों में पड़ेंगे
फिर तुम एक कदम भी नहीं चल पाओगे
लड़खड़ा कर गिर जाओगे

वैसे हम
हवा के साथ चलने को मजबूर हैं
इसलिए, यदि हवा का रुख तुम्हारे खिलाफ हुआ
तो हम हवा के साथ तुम्हारी आँखों में घुसेंगे
लेकिन यदि तुम हमें सींचते रहोगे
तो हवा का रुख तुम्हारे खिलाफ होने पर भी
हम तुम्हारे चरणों में पड़े रहेंगे
तुम्हारे लिये तैयार करते रहेंगे जमीन
और तुम्हें महकाते रहेंगे माटी की गंध से।

जोंक

जोंक
केवल खून चूस सकता है
नमक नहीं अदा कर सकता
इसलिए
उसे नमक से मारो।

चक्रव्यूह

संसार
एक चक्रव्यूह है
जिसमें
अभिमन्यु तो आते ही रहते हैं
अर्जुन कभी-कभी ही आते हैं।

तुम

हुजूर
माई-बाप,
सरकार,
अब तुम कहलाने लगे हो देवता
यही नहीं–देवता कहलाते-कहलाते
अब तुम समझने लगे हो
अपने आपको देवता
तभी तो उन्हीं की तरह
विचरते हो आकाश में–विमानों से
पैर नहीं पड़ते जमीन पर
(इसीलिए दर्शन देते हो खड़े हो खुली कार या जीप में)
प्रसन्न होते हो फ़ूल-मालाओं से, आरती-स्तुति से
(और करते हो कृपा दृष्टि)
स्वीकार करते हो भेंट और चढ़ावा
(और करते हो मुराद पूरी)
खाते नहीं, बस पीते हो सोम रस
नजरें रहती हैं अहिल्याओं पर।

भट्ठी के कोयले

हम कोयले हैं
भट्ठी के,
हमारे बीच मालिक आग लगाकर
हमें सुलगाता है
फिर हवा देकर धधकाता है

हममें से कुछ पानीदार होते हैं
जिन्हें सुलगाने में
मालिक की आँखों में आँसू आ जाते हैं
और आँखें लाल हो जाती हैं
मालिक हवा देने के तरह-तरह के हथकण्डे अपनाता है
फिर भी वे धधकते नहीं
मालिक उन्हें बार-बार कुरेदता और हवा देता है
फिर भी वे नहीं धधकते
मालिक तब उन्हें एक-एक करके
धधकते साथियों के बीच डालकर
हवा देता है
आखिर अपने साथियों के जलन की आँच से
वे अपने आपको कब तक बचा पाते
और वे भी धधकने को मजबूर हो जाते हैं

इस प्रकार हम सभी को धधकाकर
हमारी जलन की आँच से
मालिक या तो अपनी रोटी सेंकता है
या अपनी खिचड़ी पकाता है
या कभी-कभी अपने को गरमाने के लिए
हाथ भी सेंक लेता है

इसके बाद मालिक हमें
भट्ठी से निकाल कर
पानी डालकर ठण्डा कर देता है
ताकि दुबारा अपनी आवश्यकतानुसार
हमें भट्ठी में डालकर
आग-लगाकर, सुलगाकर, धधका-कर
या तो अपनी रोटी सैंक सके
या खिचड़ी पका सके
या अपना हाथ सेंक सके

मालिक यही क्रम
अपनी आवश्यकतानुसार
तब तक दुहराता रहता है
जब तक कि हम सब
जल-जल कर राख न हों जाँय।

मैं पैदल चलता हूँ

मैं पैदल चलता हूँ,

पैदल चलने से
अपने पैरों पर खड़ा रह सकता हूँ
और जमीन से जुड़ा रह सकता हूँ
इसलिए
मैं पैदल चलता हूँ

साईकिल से चलने पर
एक ही पैर पर खड़ा रह सकता हूँ
और जमीन से नहीं
सीट से जुड़ा रह सकता हूँ
इसलिए
मैं पैदल चलना पसन्द करता हूँ

स्कूटर या कार से चलने पर
किसी भी पैर पर खड़ा नहीं रह सकता हूँ
और जमीन से नहीं
गद्दी से जुड़ा रह सकता हूँ
इसलिए
मैं गर्व से पैदल चलता हूँ

यही नहीं,
जेठ की चिलचिलाती धूप में भी
मूसलाधार वारिस में भी
अमावस की रात में भी
मैं पैदल चलता हूँ
क्योंकि
उबलते सूरज के सामने भी
गरजते-बरसते मौसम में भी
डरावने अँधेरों में भी
मैं अपने पैरों पर खड़ा रहना चाहता हूँ
और जमीन से जुड़ा रहना चाहता हूँ।

हम और तुम-1

यदि हम बहुत उचके भी
और उचकाये हाथ भी
तो पहुँच पाये तुम्हारे चरणों तक ही
तुम्हारे चरण स्पर्श किए-प्रसन्न हुए
तुम्हारे चरण ही दबा सके-धन्य हुए

पर तुम्हारा हाथ तो
बैठे ही बैठे
पहुँच जाता है हमारे गले तक
आसानी से
और तुम दबा देते हो हमारा गला
फिर भी तुम्हारा मन नहीं भरता

लेकिन, महामहिम,
इतना याद रखिये
कि जो हाथ तुम्हारा चरण स्पर्श कर सकते हैं
और तुम्हारा चरण दबा सकते हैं
वे तुम्हारा चरण खींच भी सकते हैं
इस प्रकार तुम्हें
चारों खाने चित्त कर सकते हैं
जमीन सुँघा सकते हैं।

हम और तुम--२

जिन्दगी भर
हम फैलाते रहे हाथ
जबकि तुम फैलाते रहे पैर
यहाँ तक कि
मरने के बाद भी
तुम फैलाते जा रहे हो पैर
उसी शान से ।

हम और तुम--३

तुम्हारा दिल जला
जल गईं हमारी बस्तियाँ

तुम्हारा खून खौला बन्द कमरे में
बह गए हमारे खून सड़कों पर

तुम दो टकराये
गाज हम पर गिरी ।

हम और तुम—४

हम
आदमी सड़क के हैं
रहते हैं सड़क पर
कहते हैं सड़क पर
जो कहना होता है
करते हैं सड़क पर
जो करना होता है

तुम
आदमी कोठी के हो
रहते हो माँद में
सड़क पर निकले भी
तो कार में
कहते हो सड़क की
लेकिन करते हो माँद की।

हम और तुम–५

हम
आदमी हैं सड़क के
पाते हैं भरपूर हवायें
सूरज की रोशनी
और वर्षा का जल
इसीलिए अंकुरित रहता है
हमारे अन्तर का बीज

तुम
रहते हो महलों में
वातानुकूलित हालों में–
सूरज की रोशनी,
वर्षा के जल,
और हवाओं
से दूर
फिर, माननीय,
आप ही बताइये
अंकुरित कैसे होगा
आपके अन्तर का बीज।

हम और तुम–६

हमारे चलते रहते हैं हाथ
          फिर भी रहते हैं रीते
जबकि तुम
बिना हाथ चलाये ही
मार लेते हो हाँथ,

तुम
बस हिला देते हो ज़ुबान
और आ जाते हैं
तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू
जबकि हमारे ज़ुबान खोलने पर
हमारे हाथों में
पड़ जाती हैं हथकड़ियाँ

तुम
हमें दिखाते हो अँगूठे
जबकि हम
हत करते हैं अपने अँगूठे
तुम्हारे लिए

हम
यदि उठने की कोशिश भी करते हैं
सड़क से
तो तुम फिकवा देते हो हम पर कीचड़
खिंचवा देते हो हमारी टाँगे
और हम रह जाते हैं सड़क पर ही
जबकि तुम
विराजमान रहते हो
सिंहासन पर ही··हमेशा

हम जलाकर अपना शरीर
करते हैं रोशनी
जबकि तुम इसी रोशनी से
करते हो अपना घर रोशन

तुम मूल्यों की जलाते हो होली
जबकि हम इसे सीने से लगाये
हो जाते हैं दफन

हम बनाकर भी पुल
पार करते हैं गीले तन
जबकि तुम सवार रहे हम पर
और पार करते हो पुल भी
अपनी सवारी पर।

टमाटर

हम
टमाटर हैं

हम लाल-पीले हो सकते हैं
लेकिन कड़े नहीं
चाहे घुल-घुल कर गल जाँय

यदि कभी उबले भी
तो पी लिए गये

चूसे जाना, पीसे जाना
काटे जाना, टुकड़े-टुकड़े किये जाना
ही हमारी नियति है
यदि इससे बच भी गये
तो अंत में इस्तेमाल किये जाते हैं
शस्त्र की तरह
उखाड़ने के लिए पैर
प्रतिद्वन्द्वी का।

हाथ

घुटने नापता हुआ हाथ
पहले पहल बेचैन होता है
कमर से ऊपर उठकर
कसने के लिए
अपनी हथेली में हथेलियाँ

इसके बाद ही हाथ
हृदय से ऊपर उठता है
और चिपकाता है अपनी दाँयी हथेली में
बाँयीं हथेली

अंत में हाथ
कंधे से ऊपर उठ जाता है
और बँध जाती है मुट्ठी

इसलिए हाथ जब कमर से ऊपर उठे
उठकर स्वागत करो
और जब हृदय से ऊपर उठे
थोड़ा झुक जाओ।

समुद्र के जल

जब तक
तपाता रहा अपने आपको
सूरज की आँच में
चुपचाप
तब तक
गिरता रहा पिघलकर
मेरा सारा खारापन सागर में
चुपचाप
भस्म होता रहा मेरा सारा बोझ
चुपचाप
उठता रहा सागर तल से ऊपर आसमान तक
चुपचाप
होता रहा शीतल और करता रहा सभी को शीतल
चुपचाप
छाता रहा और देता रहा छाया सभी को
चुपचाप

लेकिन जब घमण्ड में
गरजने चमकने लगा और गिराने लगा बिजलियाँ
तो गिर पड़ा आसमान से जमीन पर
रोता बिलखता हुआ।

थूक

मान्यवर,
मैं कब कह रहा हूँ कि मत थूको
अरे थूको
गन्दी नाली में खखार कर थूको
गन्दी नालियाँ होती ही हैं थूकने के लिए
मगर थूकने से पहले
हवा का रुख देख लो

हवा का रुख तुम्हारे खिलाफ होने पर
तुम्हारी ही पीक तुम्हारे ऊपर गिरेगी
और गन्दी नाली मुस्कुराती रहेगी

इसी तरह हवा का रुख साथ होने पर
पीक गिरेगी साफ सुथरी पटरी पर
फिर भी नाली तो मुस्कुराती रहेगी

इसीलिए, मान्यवर,
थूको लेकिन हवा का रुख देखकर
इन्तजार करो
जब तक हवा शान्त न हो जाय—
फिर थूको
तुम देखोगे कि
पीक सीधे गन्दे नाली में गिरेगी।

टोपी, चश्मा और झण्डा

आजकल सिर छुपाने के लिए
सबसे अच्छा साधन है
कि कोई भी टोपी लगा लो

टोपी लगाने से
किसी को पता भी नहीं लगेगा
कि तुम्हारे बाल धूप में सफ़ेद हुए हैं
या दिमाग बंजर हो गया है
यदि टोपी उछलती भी है
तो तुरन्त दूसरी टोपी लपक लो
और सिर छुपा लो

इसी तरह मतलब सिद्ध करना हो
तो किसी भी रंगवाला चश्मा लगा लो
जिससे किसी को पता न लग सके
कि तुम्हारी आँख में सूअर का बाल है

इसी तरह सर पर किसी का साया पाने के लिए
किसी का भी झण्डा थाम लो।

कीचड़

वाह जनाव, वाह
वगल से सर्र से निकल गए
और सराबोर कर गए हमें
सर से पाँव तक
कीचड़ से

महामहिम,
कीचड़ तुम ही उछाल सकते हो या उछलवा सकते हो
आसानी से
क्योंकि तुम चलते हो कार से - सवारी से

हम ठहरे पैदल
सड़क पर खड़े
जमीन से जुड़े
हमें कीचड़ उछालने के लिए
पहले कीचड़ में हाथ सानना होगा
और उछालने पर हो सकता है
कि तुम सर्र से निकल जाओ
और कीचड़ पड़े सामने वाले पर
हमारी ही तरह ।

सड़क पर खड़े
जमीन से जुड़े आदमी पर
अथवा
कीचड़ पड़े
तुम्हारी सवारी पर - कार पर

महामहिम
तुम हर हालत में रहोगे
उसी तरह लक-दक
साफ-सुथरे, चमचमाते
सफेद-पोश

महामहिम
कभी तो कार पंचर होगी
कभी तो सड़क पर आओगे
तो हम तुम्हारे चेहरे पर कीचड़ पोत सकते हैं
तुम तो केवल कीचड़ उछाल सकते हो
पोत नहीं सकते
क्योंकि कीचड़ पोतने के लिए भी
कीचड़ में हाथ सानना पड़ेगा
जो तुम्हें गवारा नहीं।

बाँस

हम
बाँस हैं

हमीं बनाते हैं
सीढ़ियाँ

खपाच बन
देते हैं गति

करते हैं गंदगी दूर

लचकते हैं
पर टूटते नहीं

छेंदे भी गये
फूँके भी गये
फिर भी सुरीले रहे
बजते रहे

हमें भाँजने से कोई फायदा नहीं
क्योंकि हम किसी का सर नहीं फोड़ सकते
बल्कि खुद ही फट सकते हैं।

सिर

सिर
नीचे या ऊपर
दाँयें या बाँयें
होता है
मरने के बाद
जब मस्तिष्क
काम करना बन्द कर देता है

अतः जीते जी
मैं सिर को
न नीचे-ऊपर करना चाहता हूँ
और न ही दाँयें-बाँयें
मैं सिर को
सीधा रखना चाहता हूँ
(मस्तिष्क में उपजी बात को
जुबान देना चाहता हूँ ।)

कहानी

बच्चा कहता है
नानी,
मैं तुम्हारी कहानी में
हुँकारी नहीं भर सकता
और न ही मेरी पलकें
बोझिल हो पा रही हैं
तुम्हारी कहानी सुनकर

नानी बुदबुदाती है
बच्चा सयाना हो गया
अभी से
अथवा
इसका पेट नहीं भरा है।

सुई और कैंची

अपने भग्न हृदय को
भरते जाओ अपनी वेदना से
चुपचाप
जीवन भर
और उसी से
सिलते जाओ फटे हुए को
जोड़ते जाओ कटे हुए को
भरते जाओ छेदों को
लगाते जाओ टाँके
तभी ला पाओगे 'राम-राज्य'
दे सकोगे 'साखी'

लेकिन
जब दो भग्न हृदय
जुड़ते हैं आपस में
तो काटते हैं जुड़े हुए को
टुकड़े-टुकड़े करते हैं साबूत को
यही होती है उनके जुड़ने की सन्धि
और इस प्रकार होता है
महाभारत।

दीवार–१

दीवारों के सहारे
वसेरा लेने या अपनी दुकान खोलने
का मतलब
दीवारों को मजबूत और सुरक्षित वनाना
इसलिए
उनका सहारा मत लो
वल्कि
उन पर मूतो

दीवारें होती ही हैं
मूते जाने के लिए

अतः जितनी भी ऐसी दीवारें मिलें
जिनमें दरवाजे या खिड़कियाँ या झरोखे न हों
या यदि हो लेकिन हमेशा वन्द रहते हों
तो उन पर
बेहिचक
आँख मूँद कर मूतो
तुम देखोगे कि
तुम्हारे मूतते रहने से ।

वह तिलमिलायेगा
और तुम्हें गधा कह कर मुँह चिढ़ायेगा
तब उससे कहना
कि गधा तो तुम्हारे चरणों से
दो कदम दूर ही मूत सकने में समर्थ है,
लेकिन हम तो तुम्हारे मुँह पर
सीधे मूत सकने में समर्थ हैं
और खड़े होकर
सीधे उसके मुँह पर मूत दो

तुम्हारे इसी तरह
उसके मुँह पर मूतते रहने से
एक दिन तुम देखोगे
कि घुटन और बदबू से ऊबकर
वह बन्द दरवाजे या खिड़कियाँ या झरोखे खोल देगा
और यदि दरवाजे या खिड़कियाँ या झरोखे नहीं थे
तो नए दरवाजे या नई खिड़कियाँ
या नहीं तो कम से कम नए झरोखे
तो तुरन्त बन जायेंगे।

दीवार–२

दीवारों पर मूतने में
सबसे अधिक समर्थ हैं
अंग्रेज

उनका पहनावा ही ऐसा है
कि वे खड़े होकर सीधे
दीवारों के मुँह पर मूत सकते हैं

उन लोगों ने
मूत-मूत कर
सभी दीवारें ढहा दी हैं
तभी तो फैला था
सारे विश्व में
उनके सूरज का प्रकाश
और गूँज रही है उनकी बोली की अन्दाज।

जूता

जूता वह है
जो तलवे सहलाता हो
तलवे चाटता भी हो
जो चरण स्पर्श करता हो
चरण दबाता भी हो

यदि उससे तुम
तलवे सहलवाना
तलवे चटवाना
चरण स्पर्श करवाना
चरण दबवाना
कुछ दिन के लिए बन्द कर दोगे
तब वह तुम्हें ही काटना शुरू कर देगा
और हार कर उल्टे तुम्हें ही
उसे तेल लगाना पड़ेगा
इसलिए उससे तलवे सहलवाते रहो
तलवे चटवाते रहो
चरण स्पर्श करवाते रहो
चरण दबवाते रहो

लकीर

गांधी !
मैं तुम्हारे द्वारा खींची गई लकीर को
छोटी कर सकता हूँ
उसकी बगल में खींचकर
उससे भी बड़ी और चटक लकीर
बशर्ते
मेरी अँगुलियों में
रक्त का संचार होने दिया जाय

केवल;
नहीं चाहिए मुझे
लेखनी
स्याही
और दावात
जबकि तुम्हें
उक्त सभी चीजें
उपलब्ध थीं।

आलेख

बुद्ध !
मैं तुम्हारे द्वारा
लिखे गए आलेख को
ला सकता हूँ हाशिये पर
उसके बगल में लिखकर
उससे भी अच्छा और स्पष्ट आलेख
लेकिन
मैं नहीं चाहता
लिखना
कोई आलेख
शहर-गाँव से दूर
जंगल में ।

खरबूजे

हम
खरबूजे हैं

छुरी चाहे हम पर गिरे
या हम छुरी पर गिरें
कटेंगे हम ही

हमारी मजबूरी भी है
कि हम खरबूजे को ही देखकर
रंग बदल सकते हैं
छुरी को देखकर नहीं

न तो बेल की तरह हमें
शंकर जी की कृपा प्राप्त है
और न ही नारियल की तरह
देवी मैया की

जब एक न एक दिन
छुरी से कटना ही है
तो क्यों उससे मुँह छिपाते

भागते फिरें
क्यों न उसके ऊपर
टूट पड़े
एक साथ

हो सकता है
तेजी से छुरी पर एक साथ टूटने से
छुरी की धार पलट जाय
या हड़बड़ाहट में
हाथ से छुरी गिर जाय
यदि ऐसा नहीं भी होता है
तो भी
छुरी हम में से कितनों को काटेगी
छुरी वाला हाथ कभी तो शिथिल पड़ेगा
छुरी कभी तो हाथ से अलग होगी
फिर अकेली छुरी क्या कर सकती है
या अकेला हाथ क्या कर सकता है ।

गन्ने की फसल

हम
फसल हैं गन्ने की
हमारे पिता के तन के
कई टुकड़े किये गये
फिर उन्हीं टुकड़ों से
हम पैदा किये गये

हम में से जो अधिक मुलायम व रसभरे थे
उन्हें मालिक ने
फिर उनके परिवार वालों ने
फिर उनके रिश्तेदारों ने
और अन्त में उनके परिचितों ने
चूसा
और चूसते रहे
जब तक कि उनके दाँत दर्द नहीं करने लगे
फिर इस चूसे गये शरीर को
सुखाकर-जलाकर
हाथ सेकते रहे

हममें से जो कुछ कड़े थे
उन्हें मालिक
मशीन से साबूत पेर कर
रस निकाल कर

फिर उन्हीं के सूखे शरीर को जलाकर
उसी की आँच से रस को पकाकर
गुड़ बनाकर
लोगों से चुसवाते रहे—गपकवाते रहे
मालिक की जेव भरती रही

हममें से जो अधिक कड़े और खोटे थे
उन्हें मालिक ने बेंच दिया
मिल मालिक को
रकम लेकर
और मिल मालिक
उन्हें पेर कर, रस निकाल कर, औटाकर
चीनी बनाकर
लोगों से चुभलवाते रहे—चटवाते रहे
मिल मालिक को मालिक से भी अधिक रकम मिलती रही

अभी कुछ बचाकर रखे गए हैं
मलिक द्वारा चुनकर
कई टुकड़ों में अपना तन कटवा कर
अगली फसल पैदा करने के लिए
जो चूस लिये जायेंगे—चाट लिये जायेंगे
गपक लिए जायेंगे—चुभला लिये जायेंगे
और यही क्रम चलता रहेगा।

ताली

जब
हथेलियाँ
टकराती हैं आपस में
लगातार
तब सामने वाले की
दोनों हथेलियाँ जुड़ जाती हैं
और गले में पड़ती है
विजयमाल

आखिर
कब तक टकराती रहेंगी
हमारी हथेलियाँ
लगातार
क्या हम
इस योग्य नहीं बन सकते
कि हमारी हथेलियाँ
जुड़ जाँय
आपस में।

फैला हुआ हाथ

सड़कों
गलियों
कूचों
में फैला हाथ
और पहुँच गया संसद में,
वहाँ भी
वही हाथ फैला
और उसका अँगूठा बन गया
देश का सर्वोच्च मुहर
अब वही फैला हाथ
मुड़ कर दबा रहा है
सड़कों-गलियों-कूचों वालों का गला
वही फैला हाथ
बन गया है घूँसा
जो तन रहा है—पड़ रहा है
सड़को-गलियों-कूचों वालों पर

इसीलिए
किसी फैले हुए हाथ पर
कुछ रखने के पहले

यह अच्छी तरह समझ लो
कि यह फैला हुआ हाथ
कुछ रखने के बाद लम्बा होने पर
तुम्हें थामे रहेगा
उबारेगा
या गिरा देगा
डुबो देगा
दिखायेगा अँगूठा
मुड़कर दावने लगेगा गला
वनकर घूँसा तनेगा-पड़ेगा तुम्हारे ही ऊपर
यदि तुम्हें जरा भी सन्देह हो
कि यह फैला हुआ हाथ
कुछ पाने के बाद लम्बा होकर
तुम्हें गिरा देगा
या डुबो देगा
या दिखायेगा अँगूठा
या मुड़कर दाबने लगेगा गला
या बनकर घूँसा तनेगा-पढ़ेगा तुम्हारे ही ऊपर
तो बेहिचक
इस फैले हुए हाथ को
झटक दो।

बाँधा और दुहा

दिखाया सब्ज बाग
और बाँध लिया हमने
टुकुर-टुकुर ताकते और पागुर करते लोगों को
फिर उन्हें दुहना शुरू किया
और दुहता रहूँगा पाँच वर्षों तक
लगातार

आकाश को बाँध लेने का
हमने किया दावा
और दुहने लगे
आकाश से बँधे लोगों को
आकाश के नाम पर

बाँध लिया बछड़े को
चोरी से
और दुहा गाय को
चुपके से

बाँध लिया किसी के अँधेरे को
कैमरे की रील में
और दुह रहा हूँ उसे
मौके-बेमौके
गाहे-बगाहे।

मैं–१

मैं मानव हूँ
इसलिए न पूँछ हिला सकता हूँ
न भौंक सकता हूँ
सौम्यता से
सत्य कहने का आदी हूँ
यदि तुम सुनोगे–तो ठीक
यदि नहीं सुनोगे
तो दुबारा तुम्हारे पास कहने नहीं आऊँगा
तब मैं सत्य को लिखूँगा
सीधी-सादी सरल भाषा में
यदि तुम्हें पढ़ना हो-तो पढ़ो
यदि नहीं पढ़ोगे
तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता
मुझे कम से कम
इतना तो शकून रहेगा
कि मैं शांति से मर सकूँगा।

मैं—२

जब-जब मैंने सर को जरा उठाया
तब-तब संख्या बढ़ी पके बालों की
चेहरे की झुर्रियों की
पीली पड़ती गयी आँगन की चटक धूप
फीकी पड़ती गयी सावन की मधुर बूंद
फिर भी सफल रहा मैं
दिमाग को अपनी जगह रखने में

मुट्ठी बाँध जब-जब हाथ को
कंधे से ऊपर उठाया
तब-तब वह घूंसा बन मेरे पेट पर लगा
बोझ बढ़ा कंधे पर, कंधे झुकते गये
घिसती गई चप्पलें
तंग होती गयी चादर
पड़ता गया अकेला

फिर भी मैं थका नहीं
हारा नहीं
टूटा नहीं
आँगन की मद्धिम धूप की मुस्कुराहट
अब भी दिखाती है मशाल
साँवन की फींकी बूंद
अब भी बजाती है भेरी
सर को पुनः उठाने को
मुट्ठी बाँध पुनः हाथ कंधे के ऊपर उठाने को।

मैं–३

अपने को
समय के साथ बदलना चाहा
बदल नहीं सका
चूसना चाहा–मिचली आने लगी
खाना चाहा-उल्टी होने लगी
पचाना चाहा–गैस बनने लगी, डकार आने लगी
काजल की कोठरी साफ करना चाहा
हाथ मेरे ही काले हुए
किसी के घाव का खून पोंछना चाहा
खून से हाथ मेरे सने
तड़पते, दम-तोड़ते जीव को राहत देना चाहा
खून के छींटे मुझ पर पड़े
दुनियादारी के दंगल में
चित्त होता रहा
पछाड़ खाता रहा
आखिरकार
समय के साथ चलने का फैसला किया
लेकिन
एक ही कदम चला कि लड़खड़ा गया

प्रयास जारी है।

मैं–४

नहीं चाहिए मुझे कोई लिफ्ट
क्योंकि मैं एक-एक सीढ़ी पर पाँव रखता हुआ
चाहता हूँ ऊपर चढ़ना

नहीं चाहिए मुझे कोई कंधा
क्योंकि मेरी आवाज तोतली नहीं–कड़कती हुई है

नहीं चाहिए मुझे कोई बाँह
क्योंकि मेरे कदम डगमगाते नहीं–सही हैं

नहीं चाहिए मुझे कोई लाठी या चश्मा
क्योंकि मैं देख सकता हूँ-अपनी आँखों से

नहीं चाहिए मुझे कोई बैशाखी
क्योंकि मैं खड़ा रह सकता हूँ–जमीन से जुड़े अपने पैरों पर

नहीं चाहिए मुझे कोई बनी हुई लीक
क्योंकि मैं मूढ़-पशु-लाचार नहीं
अपनी लीक बनाने वाला समर्थ आदमी हूँ

किसी भी हालत में मैं नहीं बनना चाहता अमर-बेलि
क्योंकि हर हालत में जुड़ा रहना चाहता हूँ
जमीन से।

मैं–५

मैं समय के साथ चल नहीं सकता
अपने वसूलों से मजबूर हूँ
मैं समय को मोड़ भी नहीं सकता
अकेला हूँ

मैं समय को एक दिशा तो दे ही सकता हूँ
अथक प्रयास जारी है।

नत हथेलियाँ

भगवन, इतना साहस दो
कि मैं अपनी हथेलियाँ
नत रख सकूँ
जिससे किसी के आगे हाथ न फैला सकूँ
हथेली में सर न छुपा सकूँ
मेज के नीचे मुट्ठी न बाँध सकूँ
किसी के लिए चुल्लू भर पानी न भर सकूँ
हथेली पर सरसों न उगा सकूँ।

बीन

मैंने बड़ी मेहनत और लगन से
घर-बार परिवार से दूर रहकर
अच्छे गुरु की सेवा कर
बीन बजाने की कला सीखी है
बड़े-बड़े विषधर को भी
पाताल से ला सकता हूँ जमीन पर
चुपके से डस कर बिल में घुसने की जगह
उन्हें लोगों के बीच रहने
व नाचने पर मजबूर कर सकता हूँ
लेकिन मेरी बस्ती में अब अधिकतर
भैंस और चरवाहे ही रह गए हैं
तो क्या मैं शुरू कर दूँ
गाना बिरहा
और भाग लेना दंगल में
नहीं ! हरगिज नहीं !
मैं बेहिचक अपनी इस बस्ती को छोड़
दूसरी उस बस्ती में चला जाऊँगा
जहाँ लोग बीन की कद्र करते हैं
समझते हैं उसके सुर, लय और ताल
और रिझाऊँगा डसने वालों को भी
सिखाऊँगा उन्हें जुड़ना
जमीन से
लोगों से ।

रास्ता

मैं बनाना चाहता हूँ एक रास्ता
जिसमें पुल हो
ताकि कोई बाढ़ इसे तोड़ न सके
जो जंगलों से नहीं, बस्तियों के बगल से गुजरे
(चाहे लम्बा ही क्यों न हो)
ताकि इस पर गुजरने वाले सुरक्षित रहें
जो अधिक ऊँचा या नीचा, पथरीला या कँटीला न हो
बल्कि समतल हो (चाहे लम्बा ही क्यों न हो)
ताकि बच्चे बूढ़े महिलायें
सभी इस पर आसानी से चल सकें
जिसके दोनों किनारों पर हरे-भरे पेड़ हों
जो गुजरने वालों को साया दे सके
जिसमें स्थान-स्थान पर सराय व तालाब हों
ताकि गुजरने वाले अपने को तरोताजा रख सकें
और पहुँच सके मंजिल पर आसानी से।

चादर

यदि हमारी बस्ती में अँधेरा घिर गया हो चारों तरफ
सूरज चाँद न दिखे
रोशनी की एक किरण की भी कहीं से आशा न हो
साथ ही इसी में अँधेरे का फायदा उठाकर
अँधेरे के अभ्यस्त
कई निशाचर, भेंड़िये, साँप और विच्छू
निकल आयें अपनी गुफाओं, माँदों और बिलों से
और बस्ती में बेखौफ घूम-घूम कर
करने लगें प्रहार अपने पैने दाँतों-पंजों, विष दन्तों और डंकों से
बस्ती में किसी के पास न हो सूखी लकड़ी, न तेल, न चर्बी
रोशनी करने का कोई भी साधन किसी के पास न हो
लोग दुबके पड़ें हों घर में डर से-दहशत से
बगल से आती चीख-पुकार के सामने
हार गया हो सभी का पुरुषत्व-कर्तव्य
कोई भी आगे आने को, पहल करने को तैयार नहीं
तो आओ मेरे साथ
मैंने अपनी चादर उठाकर मोड़ ली है
और लगा दी है इसमें आग रोशनी करने के लिए
यदि तुम अपनी चादर में आग लगाने से डरते हो
तो मैंने जो रोशनी पल भर के लिए उत्पन्न कर दी है
उसमें उन पैने दाँतों-पंजों, विषदन्तों और डंकों को
तोड़ने में
सब मिलकर मेरी सहायता तो करो।

गद्गद हृदय

मेरा हृदय गद्गद हो जाता है
जब देखता हूँ
अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करते बच्चे
सीढ़ियों से ऊपर चढ़ता हुआ आदमी
पथरीली धरती को फोड़कर निकलते हुए अंकुर
काँटों में खिलते हुए फूल
और जब सुनता हूँ
मुरदों में जान डालती इन्कलाबी आवाज

यदि कभी तुम्हारी प्रबल इच्छा होती है
रेल और ट्रेन के पहिये के बीच की
या पुल और नदी के बीच की
    दूरी सशरीर नापने की
अथवा अपने को जमीन से नहीं छत से
        रस्सी के सहारे जोड़ने की
तो मेरी मानो उपरोक्त को
        देखो
        सुनो
        गुनो
तुम्हारी प्रबल इच्छा समाप्त हो जायेगी।

हत्या

गीता कहती है
आत्मा शाश्वत है
वही रहती है
शरीर बार-बार मरता है

लेकिन मैं उल्टा देख रहा हूँ
शरीर वही रहता है
आत्मा बार-बार मरती है
यहाँ तक कि कभी-कभी तो
एक ही दिन में कई बार मरती है

कुछ की तो मजबूरी है
उन्हें शरीर को सुरक्षित रखना है
किसी कर्तव्य के तहत
अतः आत्मा की हत्या करनी पड़ती है
कई बार

वे विरले ही हैं
जो आत्मा को बचाये रखने के लिए
अपने शरीर की हत्या कर देते हैं
वे कायर नहीं-कलेजे वाले हैं।

गाँधी जी के तीन बन्दर

गाँधी जी
तुम तो चले गए
लेकिन तुम्हारे सिखाये हुए
तीनों बन्दर और उनकी सन्तानें
मिल जायेंगी
हर गली-मोड़-चौराहे पर

तभी तो
अपने सामने कत्ल, बलात्कार, लूटमार होते देखकर
आँख-कान- मुँह बन्द कर लेते हैं
यहाँ तक कि
गीता-कुरान पर भी हाथ रखकर कहते हैं
कि न तो कत्ल, बलात्कार, लूटमार होते देखा है
और न ही सुनी उनकी चीखें।

वह भद्र पुरुष

मास्टर साहब परेशान हैं
उनके क्लास के तीन लड़के
अब भी झगड़ रहे हैं आपस में
एक कह रहा है हिनवाना लो
दूसरा तरबूज
और तीसरा वाटर मिलन

मास्टर साहब ने पैसे दिए थे
मन पसन्द की एक ही चीज खरीदकर
आपस में बराबर-बराबर बाँट कर
खाने के लिए

किसी भी मोड़ पर उन लड़कों को
वह भद्र पुरुष नहीं मिला जो बता सके
कि हिनवाना, तरबूज और वाटर मिलन एक ही है

ऐसा भी नहीं कि वह भद्र पुरुष नहीं है

झगड़ते-झगड़ते अब वे लड़के
शहर के चौक में पहुँच गए हैं
भीड़ भी जुट गयी है
जिसमें तमाशबीन अधिक हैं
लड़कों की आपस की बहस

अब गाली-गलौज में बदल गयी है
भीड़ अब खेमों में बँट गयी है
हर खेमे में वह भद्र पुरुष है
हर खेमे से वह भद्र पुरुष आगे बढ़ता है
और आवाज देता है
लेकिन तभी तमाशबीनों द्वारा
पीछे से उसकी टाँग खींच दी जाती है
वह भरभरा कर नाक के बल गिरता है
और उसकी आवाज भीड़ में दब जाती है
हर खेमे के तमाशबीन शह देने लगते हैं
अपने-अपने पक्ष के लड़कों को
शह पाकर तीनों लड़के
लड़ने लगते हैं आपस में मेढ़ों की तरह
और होने लगते हैं लहू-लुहान

क्या तीनों लड़के मर जायेंगे
आपस में लड़ते-लड़ते
और यह खबर सुनकर
फेल हो जायेगा हार्ट मास्टर साहब का
या टपक पड़ेगा ऊपर से वह भद्र पुरुष
ठीक उन तीनों लड़कों के बीच
किसी करिश्मे की तरह
और देगा आवाज जो गूँजेगी
भीड़ में दबेगी नहीं।

समुद्र

समुद्र
तुम जमीन से जुड़े नहीं
जुड़े हो पाताल से
तभी तो खारे हो
अन्दर है हलाहल तुम्हारे
चुराये हो अमूल्य रत्न गर्भ में

तुम अपनी सतह के ऊपर उठे भी नहीं
यदि कभी उठते भी हो
तो पूर्ण चन्द्र को देखकर अमृत-कलश के भ्रम में
और लील जाते हो
कई जाने, द्वारिकायें

कभी तो जमीन से जुड़े रहने वाला
अपनी सतह से ऊपर उठे रहने वाला
कोई मंदराचल
तुम्हारे अन्तर को मथेगा
तुम्हारे द्वारा हलाहल उत्पन्न करने पर
आगे आयेगा कोई शिव
तुम्हारे अन्तर का मथा जाना
जारी रहेगा
और मजबूरन
तुम्हें देना ही पड़ेगा
अमृत कलश।
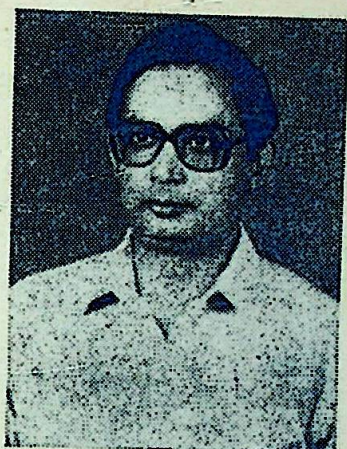
सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव

जन्म तिथि — 11 जून 1944

जन्म स्थान — ग्राम असबरनपुर, जिला-जौनपुर (उ० प्र०)

शिक्षा — पी० इण्टर कालेज, डुमरिया गंज, सिद्धार्थ नगर गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज, इलाहाबाद इंस्टीटयूट आफ टेक्नोलोजी बी०एच० यू०।

कार्य — जल संस्थान में अभियन्ता के पद पर कार्यरत। वर्तमान में जल संस्थान, वाराणसी के अधिशाषी अभियन्ता पद पर कार्यरत।

प्रकाशित काव्य संग्रह

1. परिचय (काव्य संग्रह) 1986
2. फूलों सा खिलें (काव्य संग्रह) 1987
3. अभिव्यक्ति (गीत संग्रह) 1988
4. उद्‌गार (गीत संग्रह) 1989
5. फैला हुआ हाथ (काव्य संग्रह) 1991

अप्रकाशित साहित्य

सुबह का सूरज (काव्य संग्रह)

मशाल (काव्य संग्रह)

अनुभूति (कहानी संग्रह)

●

आवरण—अमरनाथ शर्मा